International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 391-392

प्रेमचंद के साहित्य में नारी–पुरुष संबंधों में नारी

देव राज
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

हमारी संस्कृति में विवाह एक ऐसा पवित्र–बंधन है जो स्त्री–पुरुष को प्रणय के सूत्र में आबद्ध करता है। प्रारम्भ में कन्याओं को स्वयंवर के माध्यम से अपना वर चुनने की स्वतंत्रता थी। बाद में माता–पिता की स्वीकृति को अनिवार्य कर दिया गया। विवाह आधुनिक समय में माता–पिता की स्वीकृति–अस्वीकृति, दहेज, अनमेल आदि असामंजस्यों के कारण सफल ही नहीं हो पा रहे हैं। पुरुष की चरित्रहीनता, शंकालु दृष्टि, विलासिता, पारिवारिक–कलह अथवा नारी की लिप्सा, अकर्मण्यता, स्वार्थ आदि कारण विवाह को दुःखद बनाते हैं।

प्रेमचंद जी दांपत्य जीवन की सफलता, सरसता और प्रसन्नता के लिए पुरुष और स्त्री दोनों में सद्गुणों और सामंजस्य का होना अनिवार्य मानते थे, परंतु वे नारी को ही उसके लिए अधिक उत्तरदायी मानते हैं। उनके अनुसार त्याग, क्षमा, पतिव्रत आदि गुणों से दांपत्य जीवन सुखद, सफल और मंगलमय बनता है। 'सती' कहानी की रूपवती मुलिया कुरूप व काले कल्लू के प्रति पूर्ण समर्पित रहती है। "जब तक वह घर नहीं आता मछली की भांति वह तड़पती रहती है। गांव में कितने ही युवक हैं जो मुलिया से छेड़छाड़ करते रहते हैं पर उस युवती की दृष्टि में कुरूप कलुआ संसार भर के आदमियों से अच्छा है।"[1] कल्लू अपनी पत्नी को चचेरे भाई राजा द्वारा दी गई चुनरी पर मुलिया के सच बताने के बावजूद संदेह करता है। वह चरस और ताड़ी के सेवन के कारण असमय मृत्यु को प्राप्त होता है। मुलिया पर वैधव्य का पहाड–सा टूट पड़ता है। राजा के प्रणयानुरोध को ठुकराती हुई वह कहती है– "तुम्हारे लिए और दुनिया के लिए वह नहीं हैं, मेरे लिए वह अब भी वैसे ही जीते जागते है। मैं अब भी उन्हे वैसे ही बैठे देखती हूँ। पहले तो देह का अंतर था। अब तो वह मुझसे और भी नगीच हो गए है।"[2] मुलिया तथाकथित निम्न जाति की महिलाओं में भी शील और सदाचार का आदर्श स्थापित करती है।

'अहिंसा परमो धर्म' कहानी की नायिका इंदिरा को अपने सतीत्व की रक्षा के लिए मुसलमानों से संघर्ष करना पड़ता है। काजी द्वारा कमरे में बंद किए जाने और धर्म–परिवर्तन कर एक मुसलमान युवक से निकाह करने के लिए जबरदस्ती करने पर वह उनके धर्म और कर्म की भर्त्सना करती है– "क्या तुम्हें खुदा ने यही सिखाया है कि पराई बहू–बेटियों को जबरदस्ती घर में बंद करके उनकी आबरु बिगाड़ो?"[3] क्षुब्ध काजी द्वारा मार डालने की धमकी देने पर वह अत्यंत दृढ़ता से कहती है– "आबरु के सामने जान की कोई हकीकत नहीं है। तुम मेरी जान ले सकते हो, पर मेरी आबरु नहीं ले सकते।"[4] 'घासवाली' कहानी की महावीर की पत्नी मुलिया महावीर के प्रेम की प्रति पूर्णतः आश्वस्त है– "मेरे आदमी के लिए संसार में जो कुछ हूँ मैं हूँ। वह किसी दूसरी मेहरिया की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता। संयोग की बात है कि मैं तनिक सुंदर हूँ लेकिन मैं काली–कलूटी भी होती, तब भी वह मुझे इसी तरह रखता।"[5]

प्रेमचंद जी ने ऐसी नारियों का भी अंकन किया है जो विषम परिस्थितियों में भी पति के प्रति अपनी निष्ठा, विश्वास और प्रेम को अपना एकमात्र अवलंब बनाए रखती हैं। ऐसी नारियों को प्रेमचंद जी आदर्श प्रेम की प्रतिमाएं मानते हैं। 'माँ' कहानी की करुणा से उसका पति आदित्य मरबासन्न स्थिति में जब अपने जीवन के विषय में पूछता है तब वह कहती है– "तुम्हारा जीवन देवताओं का–सा जीवन था। निस्वार्थ, निर्लिप्त और आदर्श। अगर तुम माया–मोह में फंसे होते, कदाचित मेरे मन को अधिक संतोष होता, लेकिन मेरी आत्मा को वह गर्व और उल्लास न होता जो इस समय हो रहा है। मैं अगर किसी को बड़े–से–बड़ा आशीर्वाद दे सकती हूँ तो वह यही होगा कि उसका जीवन तुम्हारे जैसा हो।"[6]

'उन्माद' कहानी की बागेश्वरी विदेश में अपने पति द्वारा ईसाई धर्म ग्रहण करके जेनी नामक मेम से विवाह कर लेने पर अपने पति मनहर के वापस लौटने पर उसे वह पहले की अपेक्षा अधिक स्नेही व अनुरक्त लगता है। अपनी सौत जेनी द्वारा उपचार की बात सुनकर वह कहती है– "मेरे लिए इनका बीमार रहना, इनके स्वस्थ रहने से कहीं अच्छा है। तब वह अपनी आत्मा को भूल गए थे, अब उसे पा गए। मेरे विचार में वे तब बीमार थे अब स्वस्थ हैं।"[7] उन्माद में जेनी जब ममहर की हत्या करना चाहती है तो बागेश्वरी बीच में आ जाती है। उसके प्रेम के कारण ही मनहर स्वयं आत्महत्या कर उसे बचा लेता है। 'शाप' कहानी में विद्याधरी यदि सती है तो प्रियंका एक सफल आदर्श पत्नी है। वह शाप के कारण सिंह बने पति की सेवा पूरी तन्मयता से करती है तथा प्रायश्चित करके उन्हें पुनः शापमुक्त कराने में सफल रहती है। वह कहती है– "अब मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि अपने स्वामी के चरणों में पड़ी रहूँ और जब इस संसार से प्रस्थान करने का समय आए तो मेरा मस्तक उनके चरणों पर हो। और अंतिम जो शब्द मेरे मुँह से निकलें वह यही कि ईश्वर, दूसरे जन्म में भी इनकी चेरी बनाना।"[8]

'स्वर्ग की देवी' कहानी की लीला वेश्यागामी पति को भी गृहस्थी की ओर मोड़ देती है। उसका पति अंत में कहता है– "वह स्वर्ग की देवी है और केवल मुझ जैसे दुर्बल प्राणी की रक्षा करने के लिए भेजी गई है।"[9] शंखनाद में अकर्मण्य पति गुमान को उसकी पत्नी कर्म की ओर अग्रसर करती है। मिठाई के लिए रोते बच्चे को पिटते देख गुमान को अपने ऊपर ग्लानि आती है– "तुमने आज मुझे सदा के लिए इस तरह जगा दिया मानो मेरे कानों मे शंखनाद कर मुझे कर्म–पथ में प्रवेश कर उपदेश दिया हो।"[10] इसके विपरीत 'नरक का मार्ग' कहानी की नायिका वृद्ध, शक्की व पौरुषविहीन पति से ऐसा प्रेम न पाकर "जिससे दिल के तार सदैव बजते रहें जिसका नशा नित्य छाया रहें।"[11] उसे पति रूप में स्वीकार नहीं कर पाती तथा उसके रोगी होकर मर जाने पर भी दुःखी नहीं होती। प्रेम की खोज में घर से निकलने पर वह एक कुट्टनी द्वारा वेश्यालय पहुंचा दी जाती है, किन्तु उस स्थिति में भी वह अधिक संतुष्ट नजर आती है– "इस अधम दशा को भी मैं उस दशा से न बदलूंगी जिससे निकलकर आई हूँ।"[12]

प्रेमचंद जी विवाह को एक परम पवित्र, दृढ, स्थायी और अविच्छेद्य संबंध मानते थे। तलाक को वे जघन्य अपराध मानते

थे। उन्होंने इसके कारण अनेक दंपतियों के दांपत्य–सुख को नष्ट होते देखा था। अतः वे इसके घोर विरोधी थे। चाहे पति पत्नी का त्याग करे या पत्नी उसे छोड़कर चली जाए, परंतु नारी को ही अधिक लांछन, तिरस्कार व अपमान भोगना पड़ता है। पुरुष प्रधान समाज न केवल पुरुष को नारी से श्रेष्ठ मानकर उसके लिए नैतिकता के मापदंड भी हल्के और अपरिवर्तनीय रखता है बल्कि नारी के छोटे–से–छोटे अपराध के लिए भी कठोर दंड–विधान कर देता है।

प्रेमचंद जी ने विवाहिता नारी के आदर्श और विकृत दोनों की रूपों की परिकल्पना की है। प्रेमचंद जी के अनुसार, अभाव कष्ट, निर्धनता में पति के प्रति सत्यनिष्ठा, सेवा, भक्ति, त्याग, धैर्य आदि को बनाए रखने वाली नारियां आदर्श और सफल दांपत्य जीवन जीती है। वे पतियों की रक्षक रहकर उनको सन्मार्ग पर लाने वाली होती है। इसके विपरीत विषम दांपत्य–जीवन जीने वाली नारियों में कुछ तो पुरुष की स्वेच्छाचारिता, पाश्विकता, लोलुपता, परनारीगमन, वेश्यागामी आचरण के कारण और कुछ अपनी अविद्या, व्यक्तित्वहीनता, स्वाभिमानाभाव, कुंठा, रूढ़िग्रस्तता, लिप्सा के कारण दुःखी रहती हैं। लेखक ने अपने साहित्य में विवाहिता नारी के विभिन्न रूपों का पूर्ण सफलता के साथ अंकन किया है। सामाजिक ताना–बाना भारतीय संस्कृति के अनुरूप रखते हुए नारी–पुरुष को आगाह किया है। जीवन को सुखमय बनाने का यत्न किया है। वैवाहिक संस्कार की सार्थकता बताने में प्रेमचंद जी पूर्णतः सफल रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–4, पृ0 124
2. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–4, पृ0 130
3. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–5, पृ0 80
4. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–5, पृ0 81
5. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–1, पृ0 252
6. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–1, पृ0 42–43
7. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–6, पृ0 69
8. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–2, पृ0 114
9. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–3, पृ0 73
10. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–7, पृ0 145
11. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–3, पृ0 28
12. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–3, पृ0 30